Crop Weather Watch Group Advisory

U.P. Council of Agricultural Research, Lucknow

फसल मौसम सतर्कता समूह (क्राप वेदर वॉच ग्रुप) की सोलहवीं बैठक की संस्तुतियाँ

दिनॉक : 19 अगस्त, 2015
समय : 11.00 बजे
स्थान : उपकार सभाकक्ष

क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की वर्ष 2015–16 की सोलहवीं बैठक प्रो. राजेन्द्र कुमार, महानिदेशक, उ.प्र. कृषि अनुसंधान परिषद की अध्यक्षता में दिनांक 19 अगस्त, 2015 को उ.प्र. कृषि अनुसंधान परिषद के सभाकक्ष में सम्पन्न हुई। बैठक में निदेशक मौसम विभाग, अमौसी, लखनऊ, च.शे. आजाद कृषि एवं प्रौ. विश्वविद्यालय, कानपुर के मौसम वैज्ञानिक एवं न.दे. कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, फैजाबाद के मौसम वैज्ञानिक एवं पूर्व धान प्रजनक, कृषि विभाग, गन्ना विभाग, मत्स्य विभाग, पशुपालन विभाग, वन विभाग, भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, रिमोट सेंसिंग एप्लीकेशन सेंटर, लखनऊ एवं परिषद के अधिकारियों/वैज्ञानिकों ने भाग लिया।

भारतीय मौसम विज्ञान विभाग से प्राप्त मौसम पूर्वानुमान एवं उपग्रह से प्राप्त चित्रों के विश्लेषण के अनुसार (दिनांक 19 अगस्त से 25 अगस्त, 2015 तक) बंगाल की खाड़ी के उत्तर–पूर्वी एवं अरब सागर के दक्षिण–पश्चिम में कम दबाव का क्षेत्र विकसित होने और मानसून की नाद (ट्रफ लाइन) की अक्ष प्रदेश के पश्चिमी क्षेत्र से प्रवेश कर हिमालय के तलहटी क्षेत्रों से होकर गोरखपुर की ओर होने के कारण प्रदेश के पूर्वी, मध्य एवं तराई क्षेत्रों में मध्यम से घने बादल छाये रहने तथा सप्ताह के 20, 21 एवं 22तिथियों में मध्यम वर्षा तथा स्थानीय स्तर पर भारी वर्षा की सम्भावनाऐं हैं। प्रदेश के शेष क्षेत्रों यथा पश्चिमी (आगरा एवं अलीगढ़ मण्डल) एवं बुन्देलखण्ड (झाँसी मण्डल) क्षेत्रों में हल्के से मध्यम बादलों की मौजूदगी के साथ हल्की वर्षा 20 एवं 21 अगस्त को होने के आसार हैं। प्रदेश के सभी भागों में दक्षिण–पूर्वी/उत्तर–पश्चिमी हवाएँ 10–12 किमी. प्रति घण्टे की औसत गति से चलने के आसार हैं। इस सप्ताह प्रदेश में वर्षा से आच्छादित क्षेत्रों में अधिकतम तापमान सप्ताह के प्रारम्भिक चार दिनों में औसतन 30–32 डिग्री सेल्सियस एवं न्यूनतम तापमान 24–26 डिग्री सेल्सियस रहने तथा प्रदेश के अन्य क्षेत्रों में अधिकतम तापमान 34–36 एवं न्यूनतम तापमान 25–27 डिग्री सेल्सियस रहने की सम्भावना है। प्रदेश में अधिकतम सापेक्षिक आर्द्रता औसत रूप से 90–95 प्रतिशत एवं न्यूनतम आर्द्रता 65–70 प्रतिशत रहने की सम्भावना है। इस सप्ताह वातावरण आर्द्र रहेगा।

कृषि निदेशालय, उ.प्र. से दिनांक 18 अगस्त, 2015 तक प्राप्त वर्षा आंकड़ों के अनुसार प्रदेश के 75 जनपदों में अब तक की सामान्य वर्षा 535.9 मिमी. के सापेक्ष 367.6 मिमी. प्राप्त हुई है जो सामान्य की 68.6 प्रतिशत है। प्रदेश के पश्चिमी क्षेत्र में अन्य क्षेत्रों के सापेक्ष सबसे अधिक वर्षा 371.1 मिमी. प्राप्त हुई है जो सामान्य का 82.4 प्रतिशत है। मध्य उत्तर प्रदेश में 299.1 मिमी. वर्षा प्राप्त हुई जो सामान्य का 57.8 प्रतिशत है, पूर्वी उत्तर प्रदेश में 407.8 मिमी. वर्षा प्राप्त हुई जो सामान्य का 65.3 प्रतिशत एवं बुन्देलखण्ड में 293.9 मिमी. वर्षा प्राप्त हुई जो सामान्य का 56.5 प्रतिशत है। अब तक प्राप्त वर्षा ऑकड़ों के अनुसार सामान्य से अधिक वर्षा (120 प्रतिशत अथवा अधिक) के अन्तर्गत 2 जनपद, सामान्य वर्षा (80–120 प्रतिशत) के अन्तर्गत 25 जनपद, सामान्य से कम (60–80 प्रतिशत) 20 जनपद, 21 जनपदों में न्यून (40–60 प्रतिशत) एवं 7 जनपदों में अति न्यून (40 प्रतिशत से कम) वर्षा प्राप्त हुई है। प्रदेश के मुजफ्फरनगर एवं शामली जनपदों में क्रमशः सामान्य से 22.7 एवं 22.7 प्रतिशत अधिक वर्षा प्राप्त हुई है।

कृषि विभाग, उ.प्र. से प्राप्त आच्छादन आंकड़ों के अनुसार दिनांक 14 अगस्त, 2015 तक प्रदेश में कुल खरीफ आच्छादन लक्ष्य 95.17 लाख हे. के सापेक्ष 95.91 लाख हे. की प्रतिपूर्ति हो चुकी है जो लक्ष्य का 100.77 प्रतिशत है। धान का आच्छादन लक्ष्य 60.44 लाख हे. के सापेक्ष रोपाई की प्रतिपूर्ति 58.96 लाख हे. में हुई है जो लक्ष्य का 97.55 प्रतिशत है। खरीफ की अन्य फसलों में मक्का के आच्छादन लक्ष्य 7.74 लाख हे. के सापेक्ष 8.19 लाख हे. में प्रतिपूर्ति हुई है जो लक्ष्य का 105.71 प्रतिशत है। ज्वार की बुआई निर्धारित लक्ष्य 1.80 लाख हे. के सापेक्ष 2.04 लाख हे. में हुई है जो लक्ष्य का 113.31 प्रतिशत है। बाजरा की बुआई निर्धारित लक्ष्य 9.55 लाख हे. के सापेक्ष 9.75 लाख हे. हुई है जो लक्ष्य का 102.07 प्रतिशत है। दहलनी फसल की मुख्य फसल अरहर की बुआई 3.59 लाख हे. के सापेक्ष 3.72 लाख हे. में हुई है जो लक्ष्य का 103.65 प्रतिशत है। उर्द की बुआई के लक्ष्य 6.46 लाख हे. के सापेक्ष 6.52 लाख हे. में हो चुकी है जो लक्ष्य का 100.84 प्रतिशत है एवं मूँग का बुआई लक्ष्य 0.49 लाख हे. के सापेक्ष 0.51 लाख हे. में हो चुकी है जो लक्ष्य का 104.89 प्रतिशत है। तिलहनी फसल मूँगफली की बुआई का लक्ष्य 0.98 लाख हे. के सापेक्ष 0.99 लाख हे. में हुई है जो लक्ष्य का 100.95 प्रतिशत है। तिल की बुआई लक्ष्य 3.46 लाख हे. के सापेक्ष 4.77 लाख हे. में हो चुकी है जो लक्ष्य का 137.8 प्रतिशत है।

अतः प्रदेश में फसल एवं मौसम के इस परिप्रेक्ष्य में किसानों को निम्नलिखित सुझाव दिये जाते हैं:–

- धान में कल्ले व बाली निकलने की अवस्था नमी के प्रति संवेदनशील है। अतः इन अवस्थाओं में खेत में नमी अवश्य बनाये रखें।
- जिन क्षेत्रों में वर्षा सामान्य से कम हुई है वहां जून रोपित फसल में सूखा के प्रति सहनशीलता बढ़ाने के लिए 2 प्रतिशत यूरिया व पोटाश का छिड़काव करें।
- फसल की प्रारम्भिक अवस्थाओं में (20–30 दिन) खरपतवार से अधिक नुकसान होता है। अतः खरपतवार नियन्त्रण पर विशेष ध्यान दें। खरपतवार नियन्त्रण हेतु निकाई–गुड़ाई करें तथा यथा संभव पैडीवीयर का प्रयोग करें।
- वातावरण में तापक्रम एवं नमी की अधिकता रहने से रोग एवं कीट प्रभावी होंगे अतः कीट नियंत्रण हेतु पर्यावरण हितैषी उपायों यथा प्रकाश–प्रपंच, बर्ड पर्चर, फेरोमोन ट्रैप, ट्राइकोग्रामा तथा रोग नियंत्रण हेतु ट्राइकोडर्मा का प्रयोग करें।
- 12 प्रतिशत वार्षिक ब्याज की दर से 5 वर्ष तक ब्याज की प्रतिपूर्ति की जाने वाली कामधेनु, मिनीकामधेनु तथा माइक्रोकामधेनु योजना का लाभ पशुपालक अवश्य उठायें।
- कृषि विभाग द्वारा चलायी जा रही पारदर्शी किसान योजना के अंतर्गत कृषि निवेश, कृषि यंत्र, बीज, कृषि रसायनों को प्राप्त करने हेतु अपना रजिस्ट्रेशन कराएँ। किसान कृषि विभाग की वेबसाइट www.upagriculture.com पर ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन करा सकते हैं।

धान की खेती

- रोपाई के 25–30 दिन बाद प्रथम टॉपड्रेसिंग तथा 45–50 दिन बाद द्वितीय टॉप ड्रेसिंग नत्रजन की शेष बची हुई मात्रा के एक चौथाई यूरिया से करें। इस बात का विशेष ध्यान रखा जाय कि यूरिया की टॉप ड्रेसिंग करते समय खेत में पर्याप्त नमी उपलब्ध हो।
- रोपित धान में यदि खैरा रोग लगा है तो रोग नियंत्रण के लिये फसल पर 5 किग्रा. जिंक सल्फेट तथा 20 किग्रा. यूरिया अथवा 2.5 किग्रा. बुझे हुये चूने के साथ 800 ली. पानी में मिलाकर प्रति हे. की दर से पर्णीय छिड़काव करें।
- चौड़ी पत्ती वाले खरपतवारों के नियंत्रण हेतु मेटसल्फ्यूरान मिथाइल 20 प्रतिशत डब्लू.पी. 20 ग्राम, इथाक्सी सल्फ्यूरान 15 प्रतिशत डब्लू.डी.जी. 100 ग्राम, 2,4–डी इथाइल ईस्टर 38 प्रतिशत ई.सी. 2.5 लीटर में से किसी एक रसायन की संस्तुत मात्रा को प्रति हे. लगभग 500 लीटर पानी में घोलकर फ्लैट फैन नॉजिल से बुवाई के 25–30 दिन बाद छिड़काव करें।
- पत्ती लपेटक कीट की रोकथाम हेतु कार्बोफ्यूरान 3 जी 20 किग्रा. 3–5 सेमी. स्थिर पानी में अथवा कारटाप हाइड्रोक्लोराइड 4 जी 18 किग्रा. 3–5 सेमी. स्थिर पानी में अथवा क्लोरपाइरीफास 20 प्रतिशत ई.सी. 1.5 लीटर अथवा क्यूनालफास 25 प्रतिशत ई.सी. 1.5 लीटर अथवा मोनोक्रोटोफास 36 प्रतिशत एस.एल. 1.25 ली. प्रति हे. की दर से बुरकाव अथवा 500–600 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- अधिक नमी व गर्म तापमान कीटों के लिए अनुकूल है अतः यदि 10 हरे फुदके प्रति हिल या 15 भूरे फुदके प्रति हिल दिखाई दें तो रोकथाम हेतु क्यूनालफॉस 25 ईसी. 1.5 ली./हे. अथवा मोनोक्रोटोफॉस 36 एस.एल. 750 मिली. 500–600 ली. पानी में घोल बनाकर प्रति हे. की दर से छिड़काव करें।
- यदि हिस्पा के दो प्रौढ़ कीट या दो ग्रसित पत्ती प्रति हिल दिखाई दे तो बाईफेन्थ्रिन 10 प्रतिशत ई.सी. 500 मि.ली./हे. अथवा क्यूनालफॉस 25 ईसी. 1.50 ली./हे. की दर 500–600 ली. पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- दीमक व जड़ की सूड़ी के नियंत्रण हेतु क्लोरपायरीफास 20 प्रतिशत ई.सी. 2.5 ली. प्रति हे. की दर से सिंचाई के पानी के साथ प्रयोग करें। केवल जड़ की सूड़ी का प्रकोप होने पर नियंत्रण हेतु फोरेट 10जी 10 किग्रा. 3–5 सेमी. स्थिर पानी में बुरकाव करें।

मक्का की खेती

- मक्का में तना छेदक के 10 मृत गोभ होने पर कार्बोफ्यूरान 3 जी 20 किग्रा. अथवा फोरेट 10 प्रतिशत सी.जी. 20 किग्रा. अथवा डाईमेथोएट 30 प्रतिशत ई.सी. 1.0 ली. प्रति हे. अथवा क्यूनालफास 25 प्रतिशत ई.सी. 1.50 ली. का प्रति हे. बुरकाव/500–600 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

अरहर की खेती

- यदि कृषक अरहर की बुवाई अभी तक नहीं कर सके हैं तो अरहर की प्रजातियों पी.डी.ए. 11, पूसा–9 व पूर्वी उ.प्र. में बहार प्रजाति की बुवाई अभी भी कर सकते हैं। अरहर अधिक पानी के लिए संवेदनशील है अतः अरहर की बुआई मेड़ों पर करना लाभप्रद है।
- अरहर में पत्ती लपेटक का प्रकोप दिखाई देने पर डाईमेथोएट 30 ई.सी. 1 लीटर या इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एस.एल. 200 मिली. प्रति हे. की दर से छिड़काव करें।

उर्द–मूँग की खेती

- जिन कृषकों ने उर्द की बुआई अभी तक नहीं की है वह शेखर–1, शेखर–2 व शेखर–3 की बुआई करें।
- मूँग की संस्तुत प्रजातियों पन्त मूँग–1, पन्त मूँग–3, नरेन्द्र मूँग–1, पी.डी.एम.–54, पंत मूँग–4, पी.डी.एम.–11, मालवीय ज्योति, सम्राट, मालवीय जनचेतना, मालवीय जनप्रिया, मालवीय जागृति, आशा, मालवीय जलकल्याणी, एम.एच.–2.15, आई.पी.एम–2.3, श्वेता (के.एम.–2241) की बुआई यथाशीघ्र समाप्त करें।
- उर्द/मूंग की पत्तियों पर सुनहरे चकत्ते पड़ गये हों या सम्पूर्ण पत्ती पीली पड़ गई हो तो यह पीला चित्रवर्ण रोग (यलो मोजेक) है। यह रोग सफेद मक्खियों द्वारा फैलता है। ऐसे रोगग्रस्त पौधों को खेत से उखाड़कर जमीन में गाड दें। सफेद मक्खी के नियंत्रण के लिए डाइमिथोएट 30 ई0सी0 1 लीटर या मिथाइल ओ–डिमेटान (25 ई0सी0) 1 लीटर प्रति हे0 की दर से दो–तीन छिड़काव करें।

तोरिया की खेती

- तोरिया की मध्य उ.प्र. हेतु संस्तुत प्रजाति टा–36 (पीली), सम्पूर्ण उ.प्र. हेतु संस्तुत प्रजातियों टा–9, पी.टी.–303 तथा तराई क्षेत्र हेतु संस्तुत प्रजाति पी.टी.–30 के बीज की अग्रिम व्यवस्था कर लें ताकि सितम्बर के प्रथम पखवारे में इसकी बुआई हो सके।

मूंगफली की खेती

- खूटियां (पेगिंग) बनते समय निराई–गुडाई न की जाय।
- मूंगफली में टिक्का रोग लगने का समय है अतः सतर्क रहें। प्रकोप होने पर मैंकोजेब (जिंक मैंगनीज कार्बामेट) 2 किग्रा. या जिनेब 75 प्रतिशत घुलनशील चूर्ण 2.4 किग्रा. अथवा जीरम 27 प्रतिशत तरल के 3 लीटर अथवा जीरम 80 प्रतिशत के 2 किग्रा. के 2–3 छिड़काव 10 दिन के अन्तर पर करें।

गन्ना की खेती

- पायरिला (फुदका) कीट के नियंत्रण के लिये *इपीरिकैनिया* परजीवी के ककून अथवा अंड समूह को बाहुल्य वाले खेत से निकालकर, जिन खेतों में नहीं है उसमें गन्ना पत्तियों के पीछे नत्थी कर दें। ककून सफेद रंग एवं अंड समूह चटाईनुमा हल्का भूरा रंग का होता है, ये दोनों पत्तियों के पीछे भाग पर पाये जाते हैं। रासायनिक नियंत्रण हेतु क्यूनालफास 25 प्रतिशत ई.सी. 2 ली. अथवा क्लोरपायरीफास 20 प्रतिशत ई.सी. 1.5 लीटर प्रति हे. की दर से 800–1000 ली. पानी में मिलाकर छिड़काव करें।
- बेधक कीटों के जैविक नियंत्रण के लिये 50 हजार ट्राइकोग्रामा अंड युक्त ट्राइकोकार्ड प्रति हे. लगायें। कार्ड टुकडों में काटकर पत्तियों की निचली सतह पर नत्थी कर दें। यह कार्य 10 दिनों के अंतराल पर दोहरायें। ट्राइकोकार्ड भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, रायबरेली रोड, लखनऊ या सेंट्रल इंटीग्रेटेड पेस्ट मैनेजमेंट, जैविक भवन, लखनऊ से प्राप्त किये जा सकते हैं।
- वर्षा में गन्ने की लम्बवत् बढ़वार शुरू होती है। अतः गन्ने की बंधाई करें।
- किसी भी रोग से ग्रसित पौधों को खेत से जड़ सहित निकालकर नष्ट कर दें तथा रिक्त हुए स्थान पर संवर्धित ट्राइकोडर्मा का बुरकाव कर दें।
- आगामी शरदकालीन गन्ने की बुआई वाला खेत यदि खाली है तो हरी खाद के लिये सनई व ढैंचा की बुआई करें।

बागवानी

- आम की गुठली, अमरूद, कटहल, कागजी नींबू इत्यादि के बीजों की बुआई उठी हुई क्यारियों (रेज्ड वेड) अथवा पोलीथीन की थैलियों में करें।
- आम की प्रजातियों यथा दशहरी, लंगड़ा, चौसा, आम्रपाली (2.5x2.5 मी.), मल्लिका, रटौल, गौरजीत, बंबई हरा तथा रामकेला आदि का रोपण करें। पौधे से पौधे की दूरी 10 या 12 मीटर रखें।
- आम के नवीन बाग लगाते समय परागण हेतु उपयुक्त किस्मों का 10 प्रतिशत रोपण अवश्य करें। दशहरी प्रजाति के साथ बाग में बम्बई हरा, गौरजीत को परागण किस्म के रूप में रोपित करें।
- आम के बागों में तुड़ाई के उपरान्त संस्तुत रासायनिक उर्वरकों 500 ग्राम नत्रजन, 250 ग्राम फास्फोरस, 500 ग्राम पोटाश व 25 किग्रा. गोबर की खाद प्रति पेड़ के साथ जैविक खाद थालों में प्रयोग करें।
- शल्क कीट तथा शाखा गांठ कीट की रोकथाम हेतु डाईमेथिओएट 2 मिली0/ली0 या क्यूनालफास 2 मिली0/ली0 की दर से आवश्यकतानुसार तुड़ाई के बाद 15 दिन के अन्तराल पर प्रयोग करें।
- इस समय तराई क्षेत्रों के आम के बागों में शूट गाल सिला कीट का प्रकोप हो सकता है। इससे बचाव हेतु क्विनॉलफॉस या डाईमेथोएट (2 मिली./ली. पानी) का छिड़काव करें।
- आम के बागों में इस समय जाला बनाने वाले टेन्ट कैटरपिलर कीट का प्रकोप होता है। जाला छुड़ाने वाले यन्त्र से जाले साफ करें तथा प्रभावित प्ररोहों को काटकर कीड़ों सहित जला दें। यदि प्रकोप अधिक हो तो क्विनॉलफॉस (2 मिली./ली. पानी) का छिड़काव करें।
- अमरूद की उन्नत किस्मों यथा इलाहाबाद सफेदा, सरदार अमरूद, सुरखा व ललित का रोपण करें। पौधे से पौधे की दूरी 6 से 8 मीटर रखें।

- आँवला की किस्मों यथा कृष्णा, कंचन, नरेन्द्र आँवला–6, नरेन्द्र आँवला–7 व नरेन्द्र आँवला–10 का रोपण करें। पौधे से पौधे की दूरी 10 या 12 मीटर रखें।
- लीची की किस्मों यथा साही व कलकतिया की रोपाई करें। पौधे से पौधे की दूरी 10 से 12 मीटर रखें।
- नींबू की प्रजातियों कागजी, पंत लेमन–1 तथा इंदौर सीडलेस का रोपण करें।
- पौध प्रवर्धन हेतु आम में ग्राफ्टिंग तथा लीची व नींबू में गूँटी बाँधने का कार्य करें।
- केले की पुत्ती का रोपण करें। उपलब्धतानुसार केले की ऊतक संवर्धित प्रजाति जी–9 की पौध वरीयता पर लगायें।
- केले में एक तलवार पुत्ती को छोड़ते हुए शेष पुत्तियों की कटाई करें तथा फल वाले पौधों में स्टेकिंग (सहारा) दें।
- पपीता की प्रजातियों हनीड्यू, पूसा नन्हा, पूसा डिलीसियस, पूसा ड्वार्फ तथा पूसा मैजिस्टिक की नर्सरी में बुवाई करें।
- गत वर्ष के रोपित उद्यानों में गैप–फिलिंग का कार्य करें।

सब्जियों की खेती

- बेहन हेतु पातगोभी, मध्यकालीन फूलगोभी, शिमला मिर्च तथा टमाटर आदि की नर्सरी में बुआई करें तथा पूर्व में बोई गई तैयार पौध की रोपाई भी यथाशीघ्र करें।
- परवल की गाँठ युक्त लताओं की रोपाई करें।
- शकरकन्द की संस्तुत प्रजातियों का कन्द लगायें ताकि समय से लतायें मिल सकें।
- इस समय सब्जियों में कीड़ों का प्रकोप सर्वाधिक होता है। अतः इससे बचाव हेतु नीम आधारित उत्पादों, वर्मीवाश अथवा संस्तुति के अनुरूप कीटनाशकों का प्रयोग करें।
- नये रोपित पौधों में जल निकासी की व्यवस्था करें।

पशुपालन

- जिन पशुपालकों ने अभी तक पशुओं में गला घोंटू बीमारी की रोकथाम हेतु एच.एस. वैक्सीन से तथा लंगड़िया बुखार की रोकथाम हेतु बी.क्यू. वैक्सीन से टीकाकरण नहीं कराया है वह पशुओं को शीघ्र टीका लगवायें। यह सुविधा सभी पशु चिकित्सालयों पर निःशुल्क उपलब्ध है।
- अन्तः परजीवियों के नियन्त्रण हेतु बछड़ों/शिशुओं को पिपराजीन 05 मिली. प्रति 10 किलोग्राम शारीरिक भार की दर से तथा वयस्क पशुओं को डिस्टोडीन/एल्बन्डाजॉल 03 ग्राम प्रति पशु की दर से दें।
- वाह्य परजीवियों के नियन्त्रण हेतु बुटाक्स 02 मिली./ली. पानी में घोल कर छिड़काव करें।
- अन्तः तथा वाह्य परजीवियों के नियन्त्रण हेतु आईवर मैट्रिन इंजेक्शन 2 मिली. पशु की त्वचा में लगाएँ।
- पशुओं को मच्छर व डांस मक्खी से बचाव हेतु धुआँ करें।
- कुक्कुटों में नमी की वजह से कॉक्सीडियोसिस का प्रकोप बढ़ जाता है। अतः दाना शुष्क स्थान पर भण्डारण करें तथा रोग होने पर एम्प्रोजोल (20 प्रतिशत) 30 ग्राम 100 ली. जल में घोल कर कुक्कुटों को पिलाएं।
- पशुओं को तीन माह में एक बार कृमिनाशी दवा का पान अवश्य करायें।
- हरे चारे के साथ भूसा मिलाकर खिलायें वरना पशुओं में पतले दस्त (पोकनी) की समस्या हो जाती है।
- बरसात में चारे की फसल में दुर्गन्ध आने लगती है तथा रोग व कीट के प्रकोप की संभावना अधिक होती है। अतः हरे चारे को स्वच्छ पानी से धोकर ही कुट्टी बनाकर खिलायें।
- वर्षा ऋतु में रोग अधिक होता है अतः पशुओं के नवजात शिशु को शरीर भार के 1/10 भाग के बराबर खीस तीन बराबर भागों में बाँट कर सुबह, दोपहर एवं शाम को पिलायें।

मत्स्य पालन

- उ.प्र. मत्स्य विकास निगम की हैचरियों पर तथा निजी क्षेत्र की हैचरियों पर मत्स्य बीज उपलब्ध है। उ.प्र. मत्स्य विकास निगम की हैचरियों पर मत्स्य बीज का वितरण कार्य हो रहा है। इच्छुक मत्स्य पालक अपने तालाबों में मत्स्य बीज का संचय करायें। संचित मत्स्य बीज को शरीर भार का 1–2 प्रतिशत पूरक आहार दें।
- प्रदेश के जनपदों में राजकीय मत्स्य प्रक्षेत्रों पर भी प्रचुर मात्रा में मत्स्य बीज उपलब्ध है। मत्स्य पालक जनपदीय कार्यालय या सीधे मत्स्य प्रक्षेत्रों से पूर्व निर्धारित दरों पर क्रय कर मत्स्य बीज संचय कर सकते हैं।
- मत्स्य पालाकों को सलाह दी जाती है कि अपने तालाब में 200 किग्रा./हे. की दर से चूना का बुरकाव कर 1 टन प्रति हे. की दर से गोबर की खाद तालाब में डालकर पानी भर दें। पानी भरने के तीन दिन बाद 10000 मत्स्य बीज प्रति हे. की दर से संचय करायें।
- तालाब का जलस्तर 5 से 6 फुट बनाये रखें। कतला, रोहू, नैन प्रजातियों का उत्प्रेरित प्रजनन का यह उपयुक्त समय है। कतला, रोहू, नैन मत्स्य प्रजातियों का उत्प्रेरित प्रजनन करायें साथ ही आवश्यकतानुसार सिल्वर कार्प एवं ग्रास कार्प मत्स्य प्रजातियों का उत्प्रेरित प्रजनन भी करायें।

- मत्स्य पालक जनपद स्तर पर कार्यालय मत्स्य पालक विकास अधिकरण में मत्स्य बीज हेतु मांगपत्र दें ताकि समय से उनके तालाब में मत्स्य बीज का संचय हो सके।
- मत्स्य बीज को 15 मिनट तक पानी में पैकेट बिना खोले रखें तत्पश्चात् तालाब में पैकेट से मत्स्य बीज छोड़ें जिससे तापमान के अंतर से मत्स्य बीज को क्षति न हो।
- जिन मत्स्य पालकों के तालाबों में अवांछनीय मत्स्य प्रजातियां पाई जा रही है उनमें बार–बार जाल चलाकर मछलियों को निकाल लें।
- मत्स्य तालाब के बंधों पर नींबू, केला, करोंदा आदि का रोपण करें।
- थाई मॉगुर मछली पालना प्रतिबन्धित है। इसको न पाला जाये।

रेशम पालन

- शहतूती रेशम कीटपालक मानसून फसल के कीटपालन हेतु अपने कीटपालन घरों व उपकरणों का द्वितीय चरण का विशुद्धीकरण क्लोरोफेन्ट/ब्लीचिंग पाउडर से विभागीय कार्मिकों की देख–रेख में कर लें।
- टसर कीटपालक अम्पतिया बीजू फसल के कीटों को समय से स्थानान्तरण तथा उस पर टसर कीट औषधि का प्रयोग करें।
- मानसून सत्र का वृक्षारोपण जारी रखें तथा पौध रोपण के पश्चात् चारों तरफ की मिट्टी को दबा दें साथ ही सिंचाई कर दें। नये पौध रोपण करते समय पौधों से 90 प्रतिशत पत्ती हटा दें।
- एरी रेशम कीटपालक उन्नत किस्म की देर से बोयी जाने वाली अरण्डी के बीज प्राप्त कर तैयार की गयी भूमि में अरण्डी की बुआई करें।

वानिकी

- पौधों को छायाघर से निकालकर खुले क्षेत्र में रखें।
- पौध रोपण का कार्य अतिशीघ्र समाप्त करें।

क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की अगली बैठक 26 अगस्त, 2015 को प्रातः 11:00 बजे आयोजित किया जाना प्रस्तावित है।

नोटः

- क्राप वेदर वाच ग्रुप की बैठकों की संस्तुतियॉ वेबसाईट **www.upcaronline.org** पर भी उपलब्ध है।
- क्राप वेदर वॉच ग्रुप की बैठकों की संस्तुतियॉ इफको किसान संचार लिमिटेड के द्वारा प्रदेश के 9 लाख कृषकों को वॉयस एस.एम.एस. के रूप में कृषकों को प्रेषित की जा रही हैं।
- आंचलिक मौसम केन्द्र, मौसम विभाग, अमौसी द्वारा मुफ्त टेलीफोन सेवा प्रारम्भ की गई है, जिसका नम्बर **18001801717** है। अतः कृषक मौसम सम्बन्धी जानकारी इस फोन नम्बर पर प्राप्त करें।